शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सामाजिकता के आइने में फखरे आलम की कहानियां

सविता (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य सदैव से ही मानव समाज को आगे बढ़ने के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। वह समाज की तत्कालीन परिस्थितियों का अंकन करता है। साहित्य ने प्राचीनकाल से ही मानव जीवन को प्रभावित किया है। कहानी साहित्य की ऐसी विधा है, जिसे आम आदमी बड़े ही चाव से पढ़ता है, सुनता है। कहानियाँ जितनी लोकप्रिय पहले थी, उतनी ही आज भी महत्वपूर्ण है। विभिन्न विषयों पर छोटी-बड़ी कहानियाँ लिखी जा रही हैं और यह क्रम आज भी अनवरत रूप से चला आ रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में साहित्यकार फ़खरे आलम की कहनियों में सामाजिकता का अध्ययन किया गया है।

भूमिका

यदि हम साहित्य में संवेदनाओं की बात करें तो फखरे आलम के कहानी संग्रह 'यादों के साये' के माध्यम से समझ सकते हैं। फखरे आलम ने समाज में जो भी देखा, उसी को अपनी कहानियों का विषय बना लिया। 'यादों के साये' आलम का चर्चित कहानी संग्रह है। आलम के इस कहानी संग्रह में विधवा, पीड़ा, मुझे इंसाफ दो, एक भूल, यादों के साये , बेटी का घर , पंचायत जैसी महत्वपूर्ण कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों का तानाबाना नारी को केन्द्र में रखकर बुना गया है। लेखक ने पितृ सत्तात्मक समाज में नारी के मनोभावों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उजागर किया है।

फ़खरे आलम की कहानियों में सामाजिकता

वर्तमान समाज को चित्रित करता कहानी संग्रह 'यादों के साये' में संकलित 'आत्मविश्वास' कहानी नारी के साहस, ममत्व और त्याग की दास्तां को बयां करता है। पिता की दुर्घटना में मृत्यु होने का बाद सत्रह वर्षीय अर्चना के नाजुक कन्धों पर तीन भाई और दो बहनों के पालन-पोषण का भार आ जाता है। अर्चना परिस्थितियों से जूझती हुई प्राइमरी पाठशाला में पढ़ाना शुरु करती है। काम के मुताबिक मेहनताना न मिलने के बावजूद घर का भरण-पोषण करती हुई अपना मुकाम पाने के लिए पढ़ाई को भी जारी रखती है। वह अपनी मेहनत से इण्टर कॉलेज में लेक्चरर बनती है। अपनी जैसी बनने की ललक सभी भाई-बहनों में जागृत करती है। यही उसकी ललक और जुनून पढ़ा-लिखाकर भाई-बहनों को योग्य बनाती है। अर्चना अपने कंधों पर भाई-बहनों की जिम्मेदारी को निभाते-निभाते कब ढलान पर पहुँच गयी उसे पता ही नहीं चला ? अर्चना को छोटे भाई कक्कू की सदैव चिन्ता सालती रहती थी , उसका क्या होगा ? राजीव और अर्चना का प्यार परवान पर चढ़कर बोलता है। राजीव तलाकशुदा और स्वार्थ लोलुप व्यक्ति है। उसे अपने घर , परिवार और इकलौते बेटे के पालन-पोषण की चिन्ता सताती

है। जिसका जिक्र वह अर्चना से करता है। वह कहती है, "मुझे पता है कि बच्चे कैसे पाले जाते हैं। इसी वजह से आज मेरी इतनी आयु हो गयी है। मैं अपनी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से निभाने की कोशिश करूँगी।"1

भूमण्डलीकरण ने समय, समाज और संवेदना को प्रभावित किया तो संस्कृति से मानव और समाज कैसे अलग रह सकती है। भारतीय संस्कृति विश्वबन्धुत्व की संस्कृति है। जिसमें भाईचारे और समाज की प्रगति निहित है। भाईचारे को बनाए रखने और समाज की प्रगति की चिन्ता रचनाकार को बेचैन कर देती है। भूमण्डलीकरण का दुःप्रभाव भारतीय जनमानस को प्रभावित कर रहा है। युवा पीढ़ी इसकी चपेट में आती जा रही है। जिसका एक रूप हमें युवक-युवतियों के बीच में देखने को मिलता है। साथ-साथ पढ़ने वाले युवा-युवती पाश्चात्य संस्कृति के चक्कर में पड़ते जा रहे हैं। कुछ की शादी हो जाती है तो कुछ बिछड़ जाते हैं। 'कचरे का डिब्बा' एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें नेहा और नसीम के प्रेम की गाथा का तानाबाना है। दोनों दाम्पत्य जीवन की डोर में बंधना चाहते हैं , किन्तु धर्म , जाति, परिवार, खानदान सब उन दोनों के बीच आड़े आता है। दोनों को अलग कर दिया जाता है। नसीम अविवाहित रहकर गरीबों और जरूरतमन्दों की सेवा और इलाज करता है। एक दिन नसीम गरीब लड़के की अर्ज पर उसकी बीमार माँ को देखने जाता है। उसकी माँ को देखकर डॉ.नसीम दंग रह जाता है। वह कोई दूसरी स्त्री नहीं उसकी पूर्व प्रेमिका नेहा है। इसी बीच 'आ गये नसीम' शब्द हवा में गूंज जाता है। जब नेहा मृत्यु शैया पर है , तब उसे नसीम मिलता है। नेहा सिर्फ इतना ही कह पाती है , "अगर मौत आयेगी तो नसीम मैं तुम्हारी बाहों में ही दम तोड़ूँगी।"2

गरीबी, बेरोजगरी, नारी का अदम्य साहस, नारी का सच्चा प्यार और पति की हत्या कराने वाली नारी का रूप भी इनकी कहानियों में देखने को मिलता है। 'हत्यारिन पत्नी' कहानी में गाँव की लड़की की शादी एक कम्प्यूटर इंजीनियर से करा दी जाती है। लड़का इकलौता होने के कारण माँ-बाप की आँख का तारा है। लड़के के माँ-बाप को नाती-पोते के साथ खेलने और जीवन व्यतीत करने की इच्छा बलवती रहती है। यद्यपि बहू संतानोत्पत्ति नहीं चाहती , क्योंकि वह पति के अलावा दूसरे व्यक्ति से प्रेम करती है। वह अपने प्रेमी से कहती है , "हमारे बीच कोई बाधा है तो वह रमेश है। वह हमारे बीच से हट जाये तो मैं आपकी होकर रह जाऊँगी।"3 वह ऐसी नारी है जो भारतीय संस्कृति को चकनाचूर करती हुई अपने और अपने प्रेमी के बीच पति रूपी कांटे को हटाने के लिए कुचक्र भी रचती है, अपने पति की हत्या करवाती है और वैवाहिक संस्कृति की धज्जियां उड़ाती है।

भारतीय संस्कृति नीति का पाठ पढ़ाती है। जिसमें माता-पिता, दादा-दादी के साथ आत्मीयता का रिश्ता होता है। उसका ज्ञान मानव समाज को कराती है। किन्तु वैश्वीकरण और आधुनिकता ने इन रिश्तों में स्वार्थपन और लो भ का बीज बो दिया है, जिससे रिश्तों में दिनोंदिन ह्रास देखने को मिल रहा है। न जाने कब, कहाँ और कैसे ये रिश्ते टूट जाते हैं ? 'अनादर', अजनबी रिश्ते, 'दोस्ती' और 'श्राप' कहानियों में रचनाकार ने वृद्धों की समस्या को चित्रित करने का उत्तम प्रयास किया है। 'अनादर' कहानी में मेजर साहब फौज से रिटायर होकर घर आते हैं और सोचते हैं अब जीवन का बाकी समय हँसी-खुशी से परिवार के

साथ जीवन व्यतीत का सपना बुनते हैं। आधुनिकता ने मेजर साहब को यह भान करा दी कि नयी पीढ़ी के लिए बुर्जुग घर में पड़े एक बेकार समान की तरह हैं। मेजर साहब के बहू-बेटे उनका अनादर करते हैं। फखरे ने अपनी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं को प्रभावी ढंग से रेखांकित किया है। 'अजनबी रिश्ते' ऐसी ही एक कहानी है जिसका ढांचा औद्योगीकरण और उपनिवेशवाद के प्रभाव में सृजित किया गया है। इस कहानी में एक ऐसे परिवार की गाथा है , जिसमें पत्नी और बच्चे पण्डित को पैसा कमाने की मशीन समझते हैं। और एक दिन पंडित घर की प्रताड़ना से त्रस्त होकर संन्यासी बन जाता है। और अपना निवास मंदिर को बना लेता है। घर की आर्थिक तंगी से परेशान होकर उसका बेटा आर्थिक मजबूती के लिए संन्यासी पिता के पास आता है और संन्यासी पिता से घर लौटने को कहता है , जिसमें उसका निहितार्थ छिपा है। संन्यासी और उसके बेटे राहुल का नमूना संवादात्मक शैली देख सकते हैं कि "मैं आपका पुत्र राहुल। मेरे कोई पुत्र नहीं है। मैं तो संन्यासी हूँ।"4

निष्कर्ष

साहित्य वास्तव में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति ही है। हिन्दी साहित्य की यदि चर्चा करें तो उसमें मानवीय अनुभूतियों , संवेदनाओं आदि का बखूबी चित्रण किया गया है। औद्योगीकरण और नगरीकरण के कारण विघटित होती भारतीय संस्कृति के साथ-साथ मानव के दुःख , संत्रास, अकेलेपन, अजनबीपन आदि का फखरे आलम की कहानी संग्रह 'यादों की साये' में चित्रित है और इन समस्याओं से उबरने का रास्ता भी उनकी कहानियों में सुझाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 फखरे आलम: यादों के साये में पृष्ठ 21
2 वही, पृष्ठ 33
3 वही, पृष्ठ38
4 वही. पृष्ठ 55